॥ श्रीः ॥

# रागचंद्रिकासार

यह ग्रंथ

बंबईमें

पं० विष्णुशर्माने

आर्यभूषण यंत्रालयमें अनंत विनायक पटवर्धनने
छपवाकर प्रसिद्ध किया है.

दूसरी आवृत्ती

शके १८४१ सन १९१९

( सर्व अधिकार स्वाधीन है. )

Dr Ashok Da Ranade Archives, Pune

# रागचंद्रिकासार

यह ग्रंथ बंबई में पं० विष्णुशर्माने आर्यभूषण यंत्रालय में
अनंत विनायक पटवर्धनने छपवाकर प्रसिद्ध किया है।

दूसरी आवृत्ती
शके १८४१ सन १९१९

(सर्व अधिकार स्वाधीन है।)

Printed by Anant Vinayak Patvardhan, at the Arya Bhushan Press, Poona City and published by Vishnu Narayan Bhatkhande, 22 Carnac Road, Bombay.

---

This e-version is generated by Dr Keshavchaitanya Kunte
for Dr Ashok Da Ranade Archives, Pune

॥ श्री ॥

# रागचंद्रिकासार

श्रीगणेश गुरु रामपद वंदन कर सुविचार ॥
भाखा कर कहिहौं सुगम रागचंद्रिकासार ॥ १ ॥
भैरव कोमल रिमध सुर तीख गंधार निखाद ॥
धैवत वादी सुर कह्यो तासुं रिखब संबाद ॥ २॥ भैरव ॥
याही भैरव रागमें सुर निखाद जब नाहिं ॥
वक्र होय गंधार सुर कहत बंगाला ताहि ॥ ३ ॥ बंगाल ॥
भैरवकेही मेलमें तीखो धैवत पेखि ॥
मस वादीसंवादितें आनंदभैरव लेखि ॥ ४ ॥ आनंदभैरव ॥
भैरवके अवरोहिमें कोमल गनि सुर होइ ।।
वादीध रिसंवादितें शिवभैरव ऐसोइ ॥ ५ ॥ शिवभैरव ॥
जबही भैरव रागको ललत अंगसें गाय ॥
सम संवादीवादितें सो प्रभात कहि जाय ॥ ६ ॥ प्रभात ॥
भैरवसी है रामकली बरजै मनि आरोहि ॥
ओडव संपूरन कही संपूरन अवरोहि ॥ ७ ॥ रामकली ॥
गनि सुर बरजै गुनकली रिमध कोमलही मान ॥
वादी धैवत है रिखब संवादी सुर जान ॥ ८ ॥ गुनकली ॥
भैरव पूरब अंगमें काफी उत्तर भाग ॥
अति विचित्र द्वैरूपसें होत अहीरी राग ॥ ९ ॥ अहीरी ॥
भैरव मेलहि जोगिया नित गंधार बरजे हि ॥
वादीम ससंवादिहै आरोहत नि तजेहि ॥ १० ॥ जोगिया ॥
भैरवके संस्थानमें सौराष्ट्रीको गान ॥
द्वै धैवत सोहत अति वादी मध्यम जान ॥ ११ ॥ सौराष्ट्र ॥
कोमल रिखबरु धैवतहि सुर मनि बिना उदास ॥
वादीध रिसंवादि है ओडव राग बिभास ॥ १२ ॥ बिभास ॥

मृदु मध्यम तीवर सबही सुर सोहत जेहि मांहि ॥
धग वादी संवादि है कहत बिलावल ताहि ॥ १३ ॥ बिलावल ॥
शुक्लबिलावल कहत है सम संवादी वाद ॥
ठाट बिलावल में जबै उतरत दोउ निखाद ॥ १४ ॥ शुक्लबिलावल ॥
चढत तीख मध्यम लगे ठाट बिलावलको हि ॥
पस संवादिवादितें यमनबिलावल होहि ॥ १५ ॥ यमनबिलावल ॥
चढत बिलावल रागमें गावत नटकी तान ॥
सम संवादीवादितें नट्टबिलावल जान ॥ १६ ॥ नटबिलावल ॥
जबहि बिलावल मेलमें उतरत धग नहिं लाग ॥
सप वादीसंवादितें कहत देवगिरि राग ॥ १७ ॥ देवगिरी ॥
मृदु मध्यम सब तीख सुर मध्यमसें न चढैया ॥
कहुं निखाद कोमल लगत धगसंवाद अल्हैया ॥ १८ ॥ अल्हैया ॥
सकल बिलावलकेहि सुर धैवत वादि कहाइ ॥
संवादी गंधार रहे सर्पर्दा हो जाइ ॥ १९ ॥ सर्पर्दा ॥
ठाट बिलावल में जबै मनिको दिये निकार ॥
धग वादीसंवादितें ओडव देसीकार ॥ २० ॥ देसीकार ॥
राग बिलावल में जबै खंमाजहि मिलि जाय ॥
धग वादीसंवादितें लच्छासाग कहाय ॥ २१ ॥ लच्छासाग ॥
राग बिलावल में जबै जयजयवंती होय ॥
रिप संवादीवादितें ककुभ निखादै दोय ॥ २२ ॥ ककुभ ॥
मध्यम मृदुतीवर सबै वक्र सजत अवरोहि ॥
सम वादीसंवादितें मांड राग सुकहोहि ॥ २३ ॥ मांड ॥
सब कोमल सुर भैरवी संपूरन सुर होइ ॥
सम वादीसंवादि है सब जा चाहै कोइ ॥ २४ ॥ भैरवी ॥
कोमल सब तीवर रिखब वादी मध्यम होइ ॥
संवादी खरजहि जहां सिंधभैरवी सोइ ॥ २५ ॥ सिंधभैरवी ॥
जब भैरविके मेलसें सुर मनि दिये निकाल ॥
धग वादीसंवादितें कहत राग भूपाल ॥ २६ ॥ भूपाल ॥
सब कोमल चढत न गनी उतरत नीको त्याग ॥
सम संवादीवादितें कहियत सामंत राग ॥ २७ ॥ सामंत ॥

तीखे मनि कोमल रिगध वादी धैवत साज ॥
संवादी गंधार है टोडी राग बिराज ॥ २८ ॥ टोडी ॥
आरोही अवरोहिमें पंचम सुरको छोडि ॥
धरि वादीसंवादितें कहत गूजरी टोडि ॥ २९ ॥ गूजरी ॥
दोऊ गनिसुरके लगे टोडी भइ लाचारि ॥ लाचारी ॥
लागत तीखगंधारके टोडी कही मुखारि ॥ ३० ॥ मुखारी ॥
कोमल गमधनि तीख रिखब चढत गनी न सुहाई ॥
धग वादीसंवादितें आसावरी कहाई ॥ ३१ ॥ आसावरी ॥
कोमल गमधनि तीखरिखब चढत गंधार न होइ ॥
धग वादी संवादितें जौनपुरि कहि सोइ ॥ ३२ ॥ जौनपूरि ॥
आसावरिके ठाटमें चढते धग न लगाई ॥
परि वादीसंवादितें देसी गुनियन गाइ ॥ ३३ ॥ देसी ॥
आसवारीके मेलमें चढतन रिध सुर पेखि ॥
धग वादीसंवादितें देवगंधार सुदेखि ॥ ३४ ॥ देवगंधार ॥
धग वादीसंवादि है मिले जहां खट राग ॥
गावत गुनियनको विकट है प्रसिद्ध खट राग ॥ ३५ ॥ खट ॥
सब काफी सुरनमें धगको निर्बल राख ॥
परि वादीसंवादितें सारंगछब देसाख ॥ ३६ ॥ देसाख ॥
कोमल गमनी तीखरिखव धैवत जामें नाहि ॥
सम संवादीवादितें सूहा राग कहाइ ॥ ३७ ॥ सुहा ॥
तीवर रिध कोमल गमनि चढते ध नहिं लगाइ ॥
सप संवादीवादितें गुनि गावत सुघराई ॥ ३८ ॥ सुघराइ ॥
धग बरजै कोमल मनी तीवर रिखब सुजान ॥
परि संवादीवादितें मध्यमादि पहिचान ॥ ३९ ॥ मध्यमादि ॥
कोमल मनि तीखेहि रिध जहां बरजे गंधार ॥
परि संवादीवादितें सारंग कर निर्धार ॥ ४० ॥ सारंग ॥
जब तीखोहि निखाद है चढते धैवत नाहिं ॥
तब यह सारंग रागही बिंद्राबनी कहाइ ॥ ४१ ॥ वृंदावनी ॥
कोमल मनि गंधार नहीं अल्पहि धैवत होई ॥
सप संवादीवादितें बडहंस कह्यो सोइ ॥ ४२ ॥ बडहंस ॥

जहं तीवर है रिगधनी दोऊ मध्यम संग ॥
धग संवादीवादितें कहत गौडसारंग ॥ ४३ ॥ गौड सारंग ॥
कोमल गमनी सुर जहां चढते धग न लगाई ॥
सप वादीसंवादितें पटमंजरि गुनि गाइ ॥ ४४ ॥ पटमंजरी ॥
चढत रिखब धैवत नहीं दोउ गंधार दिखाय ॥
तीवर रिध कोमल गमनि हंसकंकनी गाय ॥ ४५ ॥ हंसकंकनी ॥
तीखे रिध कोमल गमनि आरोहत रिधहीन ॥
सम संवादीवादितें भीमपलासी चीन्ह ॥ ४६ ॥ भीमपलासी ॥
चढत रिखब धैवत नहीं सब कोमल सुरजान ॥
सप संवादीवादितें धनासिरी पहिचान ॥ ४७ ॥ धनासिरी ॥
तीवर मनि कोमल रिगध आरोहत रिधहानि ॥
पस वादीसंवादितें गुनि गावत मुलतानि ॥ ४८ ॥ मुलतानी ॥
कोमल तीवर सबहि सुर जहं गावत लग जाइ ॥
गनि वादीसंवादितें पीलू राग बताइ ॥ ४९ ॥ पीलू ॥
दो दो है धगनी जहां कोमल मध्यम जानि ॥
परि संवादीवादितें बर्वा राग बखानि ॥ ५० ॥ बर्वा ॥
तीखे गमधनि सुर रिखब कोमल पंचम नाहिं ॥
परि संवादीवादितें कहत मारवा ताहि ॥ ५१ ॥ मारवा ॥
गमधनि तीखे मृदुरिखब पंचम सुरहुं लगाय ॥
रिप वादीसंवादितें मालीगौरा गाय ॥ ५२ ॥ मालीगौरा ॥
जब मारूके मेलमें पंचम दीन्ह लगाइ ॥
धग संवादीवादितें तबहि बराटि कहाइ ॥ ५३ ॥ वराटी ॥
जब मारूके मेलमें मनि सुरको तजि देत ॥
पस वादीसंवादितें राग होत है जैत ॥ ५४ ॥ जैत ॥
रिखब नहीं धैवत नहीं तीवर गमनि बखानि ॥
सप संवादीवादितें मालसिरी पहिचानि ॥ ५५ ॥ मालसिरी ॥
कोमल रिध तीवर गनी दोऊ मध्यम लाग ॥
गनि वादीसंवादितें बनत पूरवी राग ॥ ५६ ॥ पूर्वी ॥
कोमल रिध तीवर गनी मध्यम सुर बरजोइ ॥
रिप वादीसंवादितें तिरवेनी है सोइ ॥ ५७ ॥ त्रिवेनी ॥

कोमल धैवत रिखब है मध्यम सुर न लगाइ ॥
परि वादीसंवादितें टंकी गुनिजन गाइ ॥ ५८ ॥ टंकी ॥
जबही गुनियन पूरबी द्वै धैवतसें गाइ ॥
तबही सारे जगतमें साजगिरी कहिलाइ ॥ ५९ ॥ साजगिरी ॥
कोमल धरि तीवर निगम रोहनमें नी नाहिं ॥
रिप वादीसंवादितें कहत मालवी ताहि ॥ ६० ॥ मालवी ॥
रेवा तीख गंधार है कोमल रिध कहि दीन ॥
पस संवादीवादितें गावत मनिसुरहीन ॥ ६१ ॥ रेवा ॥
गमनी सुर तीखे जहां मृदुरिध चढत न लीन ॥
गनि वादीसंवादितें जैतसिरी कहि दीन ॥ ६२ ॥ जैतसिरी ॥
कोमल रिध तीवर निगम है पंचम सुर वादि ॥
यह पूरियाधनासिरी जहां रिखब संवादि ॥ ६३ ॥ पूरियाधनासिरी ॥
कोमल रिध तीवर निगम परि संवादीवादि ॥
धग बरजे आरोहिमें यह श्रीराग अनादि ॥ ६४ ॥ श्रीराग ॥
तीख मगनि कोमलधरी वादि रिखब सुर जान ॥
संवादी पंचम कहै गौरी राग निदान ॥ ६५ ॥ गौरी ॥
चढत जहां सुर रिखब नहीं उतरत नहीं निखाद ॥
भयो पूरबी ठाटमें दीपक सपसंवाद ॥ ६६ ॥ दीपक ॥
सबही तीवर सुर जहा वादि गंधार सुहाय ॥
अरु संवादि निखादतें ईमन राग कहाय ॥ ६७ ॥ ईमनकल्याण ॥
मनि बरजे आरोहिमें तीवर सुर सब जान ॥
धग संवादीवादितें गावत सुधकल्यान ॥ ६८ ॥ सुधकल्यान ॥
आरोहीअवरोहिमें सुर मनि कीन्हे त्याग ॥
धग संवादीवादितें कहो भूपाली राग ॥ ६९ ॥ भूपाली ॥
दो मध्यम तीवर सबहि धैवत वादी जान ॥
संवादी गंधार है राग हमीर बखान ॥ ७० ॥ हमीर ॥
मध्यम दो तीवर सबहि धैवत चढत न लीन्ह ॥
सम वादीसंवादितें शाम राग कहि दीन्ह ॥ ७१ ॥ श्याम ॥
द्वै मध्यम तीखे सबहि उतरे वक्र ग होइ ॥
परि वादीसंवादि जहां कामोद कहो सोइ ॥ ७२ ॥ कामोद ॥

मृदु मध्यम तीवर सबै चढत न धैवत नेम ॥
सप वादीसंवादितें राग कहावत हेम ॥ ७३ ॥ हेम ॥
जब ईमनके मेलमें चढत न मध्यम होइ ॥
गनि वादीसंवादितें चंद्रकांत है सोइ ॥ ७४ ॥ चंद्रकांत ॥
कोमल मध्यम तीख सब उतरत धग न लखाइ ॥
सम संवादीवादितें नट छब देत दिखाई ॥ ७५ ॥ नट ॥
द्वै मध्यम तीखे सबै परि संवाद नि नाहिं ॥
चढते उतरि ग वक्रहि छायानट्ट बताहि ॥ ७६ ॥ छायानाट ॥
मध्यम द्वै तीवर सबहि आरोहत रिग हान ॥
सम संवादीवादितें केदारा पहिचान ॥ ७७ ॥ केदारा ॥
केदारहिके मेलमें शामकमोद संजोग ॥
चढत रिखब धैवत नहीं कहि मलुहा गुनिलोग ॥ ७८ ॥ मलुहा ॥
केदारहिके मेल बहु तीवर मध्यम लाग ॥
कहुं निखाद कोमल लगे कहत चांदनी राग ॥ ७९ ॥ चांदनी ॥
कोमल रिखबरु तीख सब जहां न पंचम होइ ॥
गनि वादीसंवादि है रातपूरिया सोइ ॥ ८० ॥ रात की पूरिया ॥
चढत रिखब न लगाइये कोमल मनी बिराज ॥
गनि वादीसंवादितें कहियत राग खमाज ॥ ८१ ॥ खमाज ॥
खंमाजसि खंबावती उतरत रिखब न देखि ॥
मध्यम से खरजहि गहे पंचम वक्र बिसेखि ॥ ८२ ॥ खंबावती ॥
मनि कोमल पंचम नहीं धग संवाद सुहाइ ॥
चढते रिखब न लगत है रागेसरी कहाई ॥ ८३ ॥ रागेसरी ॥
गनि वादीसंवादि है मनि सुर कोमल कीन ॥
गावत दुर्गा राग गुनि ओडव जो रिपहीन ॥ ८४ ॥ दुर्गा ॥
ओडव कोमल मनि जहां धैवत रिखब न होइ ॥
गनि वादीसंवादितें राग तिलंग कहोइ ।। ८५ ॥ तिलंग ॥
कोमल मनि झिंझूटि है चढत न लगे निखाद ॥
कहुं कोमल गंधार है धग संवादीवाद ॥ ८६ ॥ झिंजूटी ॥
मध्यम मृदु तीखे सबहि अत थोरे मनि लाग ॥
सप वादीसंवादितें होत पहाडी राग ॥ ८७ ॥ पहाडी ॥

द्वै निखाद कोमल मधम चढते धग न लगाइ ॥
धरि संवादीवादितें सोरठ गुनियन गाइ ॥ ८८ ॥ सोरठ ॥
पंचम वादी अरु रिखब संवादी संजोग ॥
सोरठकेही सुरनतें देस कहत है लोग ॥ ८९ ॥ देस ॥
द्वै गंधार निखाद द्वै संवादै रिप सोइ ॥
सोरठहीके अंगतें जैजैवंती होइ ॥ ९० ॥ जैजैवंती ॥
परि संवादीवादि है चढत न धैवत गात ॥
वक्र रिखब सोरठहिसें तिलककामोद सुहात ॥ ९१ ॥ तिलककामोद ॥
धरि तीवर कोमल मधम बिननिखाद गंधार ॥
मस वादीसंवादितें गावत राग मलार ॥ ९२ ॥ मल्लार ॥
सुध मलारके मेल में दोउ निखाद लगात ॥
सम वादी संवादितें मेघमलार कहात ॥ ९३ ॥ मेघमलार ॥
सारंगकी छब देत है गावत सुरमल्लार ॥ सुरमल्लार ॥
दरबारी ढंग होत है मीयाकी मल्लार ॥ ९४ ॥ मीयाकीमल्लार ॥
मृदु मध्यम तीखे सबै संपूरन विस्तार ॥
अल्प निखाद लगायके गावत गौंडमलार ॥ ९५ ॥ गौंड मल्लार ॥
मृदु मध्यम गंधार है मृदु तीवर हुं निखाद ॥
काफी सुंदर राग है पस वादीसंबाद ॥ ९६ ॥ काफी ॥
काफी केही मेलमें चढत गनी नहिं होइ ॥
पस संवादीवादि है राग सिंदूरा सोइ ॥ ९७ ॥ सिंदुरा ॥
रिखब नहीं धैवत नहीं कोमल गमनि बखानि ॥
गनि वादी संवादितें राग कहावत धानि ॥ ९८ ॥ धानी ॥
द्वै गंधार कोमल मनी चढत न धैवत लाग ॥
पस वादीसंवादि है सो नीलांबर राग ॥ ९९ ॥ नीलांबरी ॥
द्वै गंधार निखाद द्वै मध्यम कोमल जान ॥
तीखे रिध वादी खरज गारा राग बखान ॥ १०० ॥ गारा ॥
मृदु गमधनि तीखो रिखब अवरोहत ध न लाग ॥
रिप वादी संवादिवादितें कहत कान्हरा राग ॥ १०१ ॥ कानडा ॥
गमनी सुर कोमल जहां धैवत सुर बरजोइ ॥
सम संवादीवादितें कहो नायकी सोइ ॥ १०२ ॥ नायकी ॥

मध्यम सुर उद्ग्राह करि वादि खरज कर तार ॥
कहत हुसेनी कान्हरा कोमल मनि गंधार ॥ १०३ ॥ हुसेनी ॥
संपुरन कोमल निगम मध्यम वादी जान ॥
मालकंस मिलि कान्हरा कौंसी रूप बखान ॥ १०४ ॥ कौंसी ॥
तीवर रिध कोमल निगम धग दुर्बल दरसाहि ॥
पस संवादीवादितें कहत अडाना ताहि ॥ १०५ ॥ अडाना ॥
रिध तीखे कोमल निगम चढत नहीं ध लगाइ ॥
पस वादीसंवादितें होत सहाना भाइ ॥ १०६ ॥ सहाना ॥
तीवर रिध कोमल गमनि मध्यम वादि बखानि ॥
खरज जहा संवादि है बागेसरी लखानि ॥ १०७ ॥ बागेसरी ॥
रिध तीवर कोमल निगम उतरत धैवत टार ॥
सम संवादीवादि है समझो राग बहार ॥ १०८ ॥ बहार ॥
कोमल मध्यम तीख सब चढते रिधको त्याग ॥
गनि वादीसंवादितें जानत राग बिहाग ॥ १०९ ॥ बिहाग ॥
बरजे मध्यमको सदा सब तीवर सुर पेखि ॥
गनि वादीसंवादितें राग संकरा देखि ॥ ११० ॥ शंकरा ॥
कोमल सब पंचम रिखब दोऊ बरजित कीन्ह ॥
सम संवादीवादितें मालकंसको चीन्ह ॥ १११ ॥ मालकंस ॥
जहां रिखब पंचम नहीं सब तीखे सुर जान ॥
धग वादीसंवादितें राग हिंडोल पछान ॥ ११२ ॥ हिंडोल ॥
दो मध्यम कोमल रिखब चढत न पंचम कीन्ह ॥
सम वादीसंवादितें यह बसंत कहि दीन्ह ॥ ११३ ॥ बसंत ॥
मेल बसंत कलिंगडा परज ललत मिलि तीन ॥
मध्यम वादी संपूरन भटियारा कहि दीन ॥ ११४ ॥ भटियार ॥
जब बसंतके मेलमें पंचमहूं लग जाय ॥
पस वादीसंवादितें राग भंखार कहाय ॥ ११५ ॥ भंखार ॥
सब बसंतके सुर जहां चढत रिखब नहिं लाग ॥
सम संवादीवादितें कहियत पंचम राग ॥ ११६ ॥ पंचम ॥
जह कोमल धैवत रिखब तीख गंधार निखाद ॥
द्वै मध्यममंडित परज पस संवादीवाद ॥ ११७ ॥ परज ॥

तीवर सब कोमल रिखब पंचम बरजित होइ ॥
धग वादीसंवादि है कही सोहनी सोइ ॥ ११८ ॥ सोहनी ॥
तीवर है निग दो जहां कोमल धमरी तीन ॥
धग वादीसंवादितें कलंगडा कहि दीन ॥ ११९ ॥ कालिंगडा ॥
जबै ललत मेलमें धैवत कोमल होइ ॥
अरू उतरत पंचम लगे ललतपंचम कहोइ ॥ १२० ॥ ललत पंचम ॥
द्वै मध्यम कोमल रिखब पंचम सुर बरजोइ ॥
सम संवादीवादितें ललत राग सुभ होइ ॥ १२१ ॥ ललत ॥
ऐसे सब दिन रात के बीस और शत राग ॥
थोरेही कछु कहि दिये सेसही अंत न लाग ॥ १२२ ॥
प्रेम भक्ति रस रागसें जो रघुबर गुन गाइ ॥
सो सियराम प्रसादतें जो चाहे सो पाई ॥ १२३ ॥

॥ शुभम् ॥

# जाहिरात.

## संगीतोपयोगी ग्रंथमालिका.

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| १ | श्रीमल्लक्ष्यसंगीतम् | ( संस्कृत ) | ... ... | ०-१० |
| २ | श्रीमद्रागकल्पद्रुमांकुरः | ( ,, ) | ... ... | ०-३ |
| ३ | रागचंद्रिका | ( ,, ) | ... ... | ०-३ |
| ४ | अष्टोत्तरशतताललक्षणम् | ( ,, ) | ... ... | ०-२ |
| ५ | संगीतसारामृतोद्धारः | ( ,, ) | ... ... | ०-४ |
| ६ | सद्रागचंद्रोदयः | ( ,, ) | ... ... | ०-४ |
| ७ | अभिनवतालमंजरी | ( ,, ) | ... ... | ०-२ |
| ८ | रागलक्षणम् | ( ,, ) | ... ... | ०-६ |
| ९ | चत्वारिंशच्छतरागनिरूपणम् | ( ,, ) | ... ... | ०-२ |
| १० | रागमाला | ( ,, ) | ... ... | ०-४ |
| ११ | संगीतसुधाकरः | ( ,, ) | ... ... | ०-८ |
| १२ | हृदयकौतुकम्<br>हृदयप्रकाशः<br>रागतरंगिणी | ( ,, )<br>( ,, ) | ... ...<br>... ... | ०-८ |
| १३ | रागतत्वबोधः<br>रागमंजरी | ( ,, ) | ... ...<br>... ... | ०-८ |
| १४ | चतुर्दंडिप्रकाशिकासारः | ( ,, ) | ... .... | |
| १५ | स्वरमालिका भाग १ ला | ( टाइप गुजराथी ) | ... | ०-८ |
| १६ | गीतमालिका | ( हिंदी भाग १ ते १३ ) प्रत्येक भाग | | ०-४ |
| १७ | हिंदुस्थानी संगीत पद्धति | ( भाग १ मराठींत ) | | १-४ |
| १८ | ,, ,, ,, | ( ,, २ ,, ) | ... | २-० |
| १९ | ,, ,, ,, | ( ,, ३ ,, ) | ... | २-० |
| २० | हिंदुस्थानी संगीत पद्धति | ( भाग १ गुजराथींत ) | | १-८ |
| २१ | नादविधि | ( हिंदी ) | छापत आहे. | |
| २२ | सुगमरागमाला | ( ,, ) | | ०-४ |
| २३ | संगीत रत्नाकरः | (गुजराथी भाषांतरासह २अध्याय) | | ०-८ |
| २४ | संगीतदर्पणम् | ( ,, ,, २ ,, ) | | ०-८ |
| २५ | स्वरमेलकलानिधिः | ( मराठी भाषांतरासह ) | | ०-३ |
| २६ | पारिजातप्रवेशिका | ( मराठी ) ... ... | | ०-५ |
| २७ | रागविबोधप्रवेशिका | ( ,, ) ... ... | | ०-६ |
| २८ | स्वरमालिका भाग १ ला | | | ०-१२ |

पत्रव्यवहार खालील पत्त्यावर करावा.

पत्ताः-मालचंद्र सीताराम सुकथनकर, एम्. ए.,एलएल्. बी.,
सालिसिटर, २२ कार्न्याक रोड, मुंबई.

Dr. Ashok Da Ranade Archives, Pune